ऑडियो नंबर–207 कम्पिला ओमशांति 22.06.86 प्रातः क्लास

कहते हैं– आखिर वह दिन आया आज...। बेहद का बाप बैठ बेहद के बच्चों को समझाते हैं। समझाने वाला कौन है? बेहद का बाप। बेहद के बाप कितने हैं? बेहद के बाप हैं दो। एक आत्माओं का बाप और एक मनुष्य–आत्माओं का बाप, मनुष्यों का बाप। आत्माओं का बाप, आत्माएँ निराकार तो आत्माओं का बाप भी निराकार ज्योतिबिंदु। वो ही समझाने वाला है। वो ही पारलौकिक गॉडफादर कहा जाता है; लेकिन वो समझाता है बेहद के मनुष्य–सृष्टि के बाप के थ्रू। बेहद माना कोई हद नहीं है। कितने ढेर बच्चे हैं। बेशुमार हैं। बेशुमार हैं! गिनती नहीं है क्या? गिनती नहीं की जा सकती। कहने को कह देते हैं 500 करोड़/600 करोड़, 700 करोड़ मनुष्य–आत्माएँ भी बताई हैं। इसका मतलब उनकी एक्युरेट गिनती हो नहीं सकती है। इतने बेशुमार बच्चों का एक ही बाप है जिसको रचयिता कहा जाता है। किसका रचयिता? रचयिता और रचना का सम्बंध होता है। क्रिएटर और क्रिएशन। क्रिएटर क्रिएट करता है उस चीज़ को जो पहले नहीं होती है। आत्माएँ क्रिएट करी जाती हैं क्या? आत्माएँ अनादि हैं या क्रिएट की जाती हैं, रचना रची जाती हैं? आत्माओं की रचना नहीं होती है। तो आत्माओं का बाप सुप्रीम सोल बिंदु रूप में कोई रचयिता नहीं है। रचयिता कब बनता है? जब मनुष्य–सृष्टि के साकार पिता में प्रवेश करता है तो वो रचयिता है, क्रिएटर है। क्या क्रिएट करता है सबसे पहले? ब्राह्मणों की रचना रचता है। पहले बाप ब्राह्मणों को रचने के लिए अपनी बन्नी बनाता है। किसको? ब्रह्मा = ब्रह्म माना बड़ी, माँ माने माँ, बड़ी माँ को। तो रचयिता कहा जाता है। वो हैं हद के बाबाएँ और यह है बेहद की रूहों का एक ही बाप जिसको भक्तिमार्ग में सब रूहें याद करती हैं।

तुम बच्चे जानते हो, भगवान को सब भक्त याद करते हैं। ये भक्तिमार्ग है, साथ–2 रावण–राज्य भी है। अब मनुष्य पुकारते हैं हमको रावण–राज्य से राम–राज्य में ले जाओ। बाप समझाते हैं– देखो, देवी–देवताएँ जो भारत के मालिक थे, राजा–रानी तो होते हैं। तुम बच्चों को अभी स्मृति आई है। बाबा आया हुआ है। हम बच्चों को राज्य–भाग्य का वर्सा देंगे। विश्व का मालिक बनावेंगे। बाप कहते हैं अब सब भक्तिमार्ग में हैं। भक्तिमार्ग को ही दुर्गतिमार्ग कहा जाता है, रावण–राज्य कहा जाता है। वो ज्ञानमार्ग सिर्फ एक बाप ही सिखलाते हैं। 'सिर्फ' क्यों लगाया? एक बाप के सिवाय कोई मनुष्यमात्र ज्ञानमार्ग नहीं सिखलाय सकता। बाकी सब भक्ति ही सिखलाते हैं तुम बच्चों को। उस बेहद के बाप को भक्तिमार्ग में भी सब याद करते हैं। जो ज्ञानमार्ग सिखलाते हैं।

अभी तुमको 21 जन्मों के लिए ज्ञान की राजधानी मिलती है। फिर आधा कल्प तुम पुकारेंगे नहीं। हाय राम, हाय प्रभु, ये कहने की तुमको दरकार ही नहीं रहेगी। हाय राम तब कहते हैं जब दुःखी होते हैं। तुमको वहाँ दुःख होता ही नहीं है। अभी तुम जानते हो यह भी खेल बना हुआ है। आधा कल्प है ज्ञान दिन, आधा कल्प है भक्ति रात। आधा कल्प माना?

(किसी ने कुछ कहा–...) सतयुग–त्रेता दिन और द्वापर–कलियुग रात? अज्ञान अंधेरी रात होती है। अगर कहें सतयुग–त्रेता में दिन होता है तो क्या वहाँ देवताओं को ज्ञान होता है? दिन में तो सोझरे में होने चाहिए। लेकिन देवताओं में तो ज्ञान होता नहीं। फिर, रात और दिन आधा–2 कहाँ की बात हुई? ज़रूर संगमयुग पर जब ज्ञान–सूर्य शिव प्रत्यक्ष होता है, साकार में प्रत्यक्ष होकर पार्ट बजाता है, तो दिन है ब्राह्मण बच्चों के लिए और जब वो गुप्त हो जाता है तो अज्ञान अंधेरी रात हो जाती है। ज्ञान चंद्रमा प्रकाशित होता है, रोशनी देता है और सितारे चमकते हैं, रोशनी देते हैं, बाकी ज्ञान–सूर्य छिप जाता है। जब ज्ञान–सूर्य छिप जाता है तो भक्ति की घोर अंधियारी रात हो जाती है। तुम बच्चे जानते हो भक्ति हमको नीचे उतारती है। तुम बच्चों की बुद्धि में सीढ़ी का नॉलेज ज़रूर चाहिए। कैसे नीचे उतरते हैं। 84 का चक्र तो सबके मुख में रहता ही है। परंतु यह 84 का चक्र किसको लगाना है, यह कोई जानते नहीं हैं। दूसरे धर्म वालों के लिए 84 का चक्र नहीं है। दूसरे धर्म की जो बीजरूप या आधारमूर्त आत्माएँ सतयुग–त्रेता में आती हैं, उनके लिए भी 84 का चक्र नहीं है। 84 का चक्र सिर्फ जो देवी–देवता सनातन धर्म के पक्के हैं, उनके लिए है। बाप समझाते हैं यह चक्र है जिस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। इसलिए बाबा इस चक्र (का) ये चित्र भी बनवाय रहे हैं। जिससे सिद्ध होता है कि हम चक्र को जानने से 21 जन्म के लिए राज्य–भाग्य ले लेते हैं।

अभी तुम बहुत हो गए हो। बड़ी रूहानी शक्ति सेना बनी है। तुम सब पंडे हो। बाबा पंडा है। उनको कहा जाता है गाइड। 'पंडा' अक्षर शुभ होता है। यात्रा पर ले जाने वाले को पंडा कहते हैं। यात्री जाते हैं तो उनको एक गाइड मिलता है कि इनको यह सब सिखाओ, बताओ। तीर्थ यात्रा पर भी पंडे मिलते हैं। बाप कहते हैं जन्म–जन्मांतर तीर्थ यात्रा करते–2 अब तुम्हारा क्या हाल हो गया है। अमरनाथ पर जाते हैं, तीर्थों पर जाते हैं, परिक्रमा लगाते हैं। वहाँ जाने के समय फिर वो ही याद रहता है। घर–बार, धंधा–धोरी से दिल हट जाती है। यहाँ तुमको समझाया जाता है– अपने घर–गृहस्थ में रहते हुए धंधा–धोरी भी करते रहो और फिर गुप्त यात्रा पर रहो। यह कितनी अच्छी बात है। जितना बड़ा धंधा करना है उतना करो। किसको भी मना नहीं है। भल अपनी राजाई भी सम्भालो। राजा जनक को भी सेकेंड में जीवनमुक्ति मिली। अपना राज्य तो चलाया होगा ना! बाप समझाते हैं भल अपनी राजाई भी हो। सिर्फ याद की यात्रा पर रहना है। तुमको कोई बाहर की यात्रा आदि की तरफ नहीं ले जाते हैं। बाहर की तरफ धक्के खाने की दरकार ही नहीं। अपने घर–बार की भी पूरी सम्भाल करनी है।

जो सेंसीबुल बच्चे हैं वो समझते हैं हमको घर–गृहस्थ में रहते कमल–फूल समान रहना है। गृहस्थ–व्यवहार में तंग नहीं होना चाहिए। कुमार–कुमारी तो जैसे संन्यासी हैं। उनमें विकार नहीं होता है। क्या कह दिया! कुमार–कुमारी संन्यासी हो गए? कैसे? घर–गृहस्थ में नहीं रहते हैं क्या? (किसी ने कहा– पवित्र रहते हैं) हाँ, घर–गृहस्थ में रहते तो हैं मात–पिता

के साथ; लेकिन कोई ऐसा शरीर का अटैचमेंट उनके लिए नहीं बँधा हुआ है जिसमें वो बंधन में आ जाएँ। वे 5 विकारों से दूर हैं।

अभी तुम बच्चे जानते हो हमारा श्रृंगार ही और प्रकार का है। उनका और प्रकार का श्रृंगार है। उनका है तमोप्रधान श्रृंगार और तुम्हारा है सतोप्रधान श्रृंगार। जिससे तुमको सतोप्रधान सूर्यवंशी राजाई में जाना है। बाप तुम बच्चों को समझाते हैं– तमोप्रधान जिस्मानी श्रृंगार ज़रा भी मत करो। दुनियाँ बहुत खराब है। गृहस्थ–व्यवहार में रहते फैशनेबुल मत बनो। फैशन आजकल की दुनियाँ में कशिश करता है, बाहरी चमक–धमक। इस समय खूबसूरती अच्छी नहीं है। किस समय? संगमयुग में जब बाप आते हैं तब। काले हो तो और अच्छा है, कोई भी पंजा नहीं मारेगा और खूबसूरत है तो कोई–न–कोई माया या रावण का रूप बन करके पंजा मारता रहेगा और बाप से दूर करता रहेगा। खूबसूरत के पिछाड़ी तो फिरते ही रहते हैं। कृष्ण को भी साँवरा कहते हैं। तुमको गोरा बनना है, शिवबाबा से। वे गोरे बनते हैं पाउडर आदि से। तो देखो, कितना फैशन है। बात मत पूछो। साहूकारों की तो सत्यानाश है। गरीब अच्छे हैं।

गाँवड़ों में जाकर गरीबों का कल्याण करना है। क्या कहा? बाबा की मत ये नहीं कि बड़े–2 शहरों में ही तुम बड़े–2 आश्रम खोल दो। बाबा का खिंचाव कहाँ रहता है? गाँवड़ों की तरफ। क्यों? क्योंकि गाँवों में गरीब लोग रहते हैं और गाँवों में भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या रहती है और सारे भारत का उद्धार करना है तो 70 प्रतिशत को छोड़ नहीं सकते हैं। जो बड़े–2 ब्रह्माकुमारी आश्रम खुले हैं तो बड़े–2 शहरों में तो खुल गए। ज़्यादा दबाव भी हुआ; लेकिन गाँव वालों को पता भी नहीं है। लेकिन असली स्थापना कहाँ से होगी? जहाँ प्योरिटी की पावर जास्ती होगी, वायुमंडल अच्छा होगा। तो गाँवड़ों में जाकर गरीबों का कल्याण करना है; परंतु आवाज़ करने वाले बड़े आदमी भी चाहिए। वो कहाँ मिलेंगे– शहरों में या गाँवों में? वो बड़े–2 शहरों में पहुँच जाते हैं। तुम सब गरीब हो ना! कोई तुममें साहूकार है क्या? तुम देखो, कैसे साधारण बैठे हो।

बम्बई में जाकर कोई फैशन देखे। देखो, क्या लगा पड़ा है। बाबा के पास मिलने आते हैं तो कहता हूँ तुमने यह जिस्मानी श्रृंगार किया है, अब आओ तो तुमको ज्ञान श्रृंगार करावें। जिससे तुम स्वर्ग की परी 21 जन्मों के लिए बन जाएँगी, सदा सुखी बन जाएँगी, न कब रोएँगे और न दुःख होगा। अभी यह जिस्मानी श्रृंगार तुम छोड़ दो। तुमको ही ज्ञान–रत्नों से ऐसा फर्स्टक्लास श्रृंगार कराएँगे जो बात मत पूछो। अगर मेरी मत पर चलेंगे तो तुमको पटरानी बनाऊँगा। तुमको इस नर्क से भगा करके स्वर्ग की महारानी भी बनाता हूँ। ऐसे नहीं समझना, किससे बात कर रहे हैं? बम्बई वालों से। तुमको पटरानी बनाऊँगा। इस नर्क से भगा कर स्वर्ग की महारानी बनाता हूँ। पटरानी बड़ी या महारानी बड़ी? (किसी ने कहा–महारानी) महारानी राधा को कहते हैं और बाकी पटरानियाँ 8 हैं जो 8 धर्मों से कनेक्टेड हैं, 8 धर्मों की फिमेल मुखिया हैं। अष्ट शक्तियाँ भी कही जाती हैं। तो तुमको महारानी–पटरानी बनाऊँगा, यह तो अच्छा हुआ

ना! उनका पटरानी नाम क्यों रखा? हाँ! पुरुषार्थ करते–2 बहुत ऊँची चढ़ती हैं और कोई डिफेक्ट उनसे खत्म नहीं होता। जिस धर्म से कनेक्टेड होती हैं उस धर्म का जो डिफेक्ट है वो उनसे जल्दी समाप्त नहीं होता पुरुषार्थ में। तो पट में जाकर गिरती हैं। तो उनका नाम क्या पड़ा? पटरानी। तुम सब भारतवासियों को तमोप्रधान आसुरी दुनियाँ नर्क से भगा करके स्वर्ग की महारानी बनाता हूँ। तुमको फर्स्टक्लास श्रृंगार कराएँगे।

तुम बच्चे समझते हो आज हम सफेद पोश में हैं। दूसरे जन्म में स्वर्ग में सोने के चम्मच से दूध पिएँगे। यह तो बहुत छी–2 दुनियाँ है। स्वर्ग तो स्वर्ग ही होता है, बात मत पूछो। यहाँ तुम बेगर हो, भारत बेगर है और बेगर टू प्रिंस गाया हुआ है। बेगर भारत बेगर से क्या बनता है? प्रिंस बन जाता है। तो जो भारत बेगर से प्रिंस गाया हुआ है तो किस जन्म की बात है? ये गायन किस समय का है? ज़रूर संगमयुग का गायन है। क्या गायन है? कि जो बेगर थे उनको परमात्मा आ करके विश्व की बादशाही दे देता है। भारत अंतिम जन्म में बेगर हो जाता है, भीख माँगता रहता है। सीढ़ी के चित्र में नीचे दिखाया है भारत बेगर के रूप में पड़ा हुआ है और ब्रह्मा को खड़ा हुआ दिखाया है। क्या मतलब हुआ? बेगर के रूप में पड़े होने का मतलब क्या हुआ? कि बिल्कुल पुरुषार्थ नहीं है, तमोप्रधान स्टेज में आ गया, पतित बन चुका। कृष्ण और क्राइस्ट की राशि मिलाई जाती है। क्रिश्चियन्स के लिए कहते हैं– न ज़्यादा सतोप्रधान बनते, न ज़्यादा तमोप्रधान बनते हैं। तो ज़रूर कृष्ण की भी आत्मा न ज़्यादा सतोप्रधान बनती और न ज़्यादा तमोप्रधान बनती है। राम वाली आत्मा अंतिम जन्म में आ करके सबसे जास्ती तमोप्रधान बन जाती है और वो ही फिर विश्व का मालिक भी बनती है। तो गायन है एक ही जन्म का। एक ही जन्म में बेगर और उसी जन्म में बेगर टू प्रिंस। ये शिवबाबा का 5 ईयर प्लान होता है। वो प्लान तो बनते ही रहते हैं– एक के बाद दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ। पंचवर्षीय, छः वर्षीय योजना और सप्तम् योजना, अष्टम्– ये बनती ही रहेंगी; और यहाँ? यहाँ बाप एक ही बार प्लानिंग करते हैं बेगर टू प्रिंस बनाने की। कब से कब तक की ये प्लानिंग है? ये 1976 से ले करके 1980 तक की प्लानिंग है। 1976 में(के लिए) विनाश की घोषणा की थी। भारत जो तमोप्रधान बन जाता है वो ही भारत फिर सात्विक स्टेज में कदम रखता है। ये ज्ञान–रत्नों का फोर्स है। तो बताया– बेगर टू प्रिंस गाया हुआ है। इस भारत में ही फिर जन्म लेंगे। जो यहाँ बेगर टू प्रिंस बनते हैं, वो यहीं राजाएँ बनेंगे, दूसरे देश में जा करके राजाई नहीं करेंगे। बाप ने हमको स्वर्ग का मालिक बनाया था। तो रात–दिन का फर्क हो जाता है। महान गरीब जिसको खाने के लिए नहीं होता, उनको ही दान किया जाता है। तो बाबा भी कहाँ आ करके दान करते हैं। (किसी ने कहा–भारत में ही करते हैं) मुरली में बोला है– ''मैं ऐसे गंदे–ते–गंदे गाँव में आता हूँ, जहाँ के लोगों को पेट भर खाने के लिए भोजन भी नहीं मिलता।'' (मु.ता.6.7.84 पृ.2 मध्य) इतने गरीब बन जाते हैं। तो महान गरीब जिनको खाने के लिए नहीं मिलता उनको ही दान दिया जाता है। लेकिन कौन–सा दान करते हैं? ज्ञान–रत्नों का दान करते हैं। भारत ही महान गरीब है।

बिचारों को यह पता ही नहीं है कि इस समय सब तमोप्रधान हैं। दिन–प्रतिदिन सीढ़ी नीचे उतरते ही रहते हैं। अभी कोई सीढ़ी चढ़ नहीं सकता। 16 कला से 14 कला, फिर 12 कला, फिर 10 कला... नीचे उतरते ही जाते हैं। यह ल.ना. भी पहले 16 कला सम्पूर्ण थे। फिर 14 कला में उतरते हैं। यह भी अच्छी रीति याद करना है। सीढ़ी उतरते–2 बिल्कुल ही पतित बने। फिर स्वर्ग का मालिक कौन बनाएगा? यह वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है। यह भी सब कहते हैं कि वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है। पर अभी कौन–सी हिस्ट्री रिपीट हो रही है? यह कोई नहीं जानते। शास्त्रों में तो लिख दिया है सतयुग की आयु लाखों/करोड़ों वर्ष है। पूछो सतयुग कब आएगा? तो कहेंगे अभी तो कलियुग में ही 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। तुम तो सिद्ध कर सकते हो। सिद्ध करके बतलाते हो– कल्प की आयु ही 5000 वर्ष है। वो फिर सतयुग की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। कौन? शास्त्रकार। तो शास्त्रों में बातें कहाँ की लिखी हुई हैं? किस समय की यादगार है? संगमयुग में ही जब सतयुगी शूटिंग होती है तो सतयुगी शूटिंग में विशेष हिस्सा लेने वाली जो आत्माएँ हैं, जो सिंध हैदराबाद से आदि से चली आई हैं, उनके लिए ये पीरियड बहुत लम्बा हो जाता है। शुरुआत से बाबा कहते चले आए– बच्चे, सतयुग आया कि आया और सतयुग और ही दूर होता चला जाता। तो उन आत्माओं की बुद्धि में ये बैठ जाता है कि ये तो बहुत लम्बा समय है। तो सतयुग की शूटिंग में बहुत लम्बा समय लगता है। त्रेतायुगी आत्माओं के लिए उतना लम्बा समय नहीं है। द्वापरयुगी आत्माओं का और कम पीरियड है शूटिंग काल में और कलियुगी आत्माएँ जो उतरती हैं उनके लिए शूटिंग का पीरियड और कम। तो उन्होंने आयु ही लाखों वर्ष लिख दी है।

आखिर लिखने वाले शास्त्रों में हैं कौन? शास्त्र बनाए किसने? सबसे जास्ती शास्त्र कौन बनाता है? व्यास बनाता है। ये व्यास कौन है? कहते हैं व्यास जी ने शास्त्र बोले हैं मुख से और गणेश जी ने लिखे हैं। तो व्यास कौन हुआ? जिसने सिर्फ मुख से बोला और गणेश कौन हुआ? जिसने शास्त्र लिखे। दोनों में शर्त लगी कि हम जितनी स्पीड से बोलेंगे उतनी स्पीड से तुमको लिखना पड़ेगा। तो व्यास असली हुआ वो जो बोलता है सिर्फ। तो व्यास भगवान कौन हुआ? संगमयुग में व्यास भगवान कौन हुआ? शिवबाबा वो ही संगमयुग का व्यास भगवान हुआ, जो वो ही सबसे जास्ती ड्रामा बनाता है। ड्रामा बनाना ये किसके हाथ की बात है? परमात्मा शिव जिस स्वरूप में प्रवेश करते हैं पहले–2 वो ही सबसे ज़्यादा ड्रामा का हीरो है, मुख्य एक्टर है। और भी जितनी भी आत्माएँ सतयुग में आती हैं विशेष पार्ट बजाने वाली, सहयोगी बनती हैं, वो भी साथी हैं। तो घोर अंधकार भी उन्हीं के लिए होता है कलियुग में आकर।

अब मनुष्य कैसे मानें कि भगवान आया होगा। वो तो समझते हैं भगवान तब आएगा जब कलियुग का अंत होगा। अभी तुम बच्चे इन बातों को समझते हो। विनाश भी सामने खड़ा है। बच्चों को समझाया जाता है विनाश के पहले बाप से वर्सा ले लो। विनाश होने के बाद फिर मार्जिन नहीं रहेगी। या विनाश शुरू हो गया तो भी मार्जिन नहीं रहेगी। फिर टू लेट हो जाएँगे,

भगदड़ मच जाएगी। कौन–सा वर्सा लेना है? बाप से वर्सा लेना है ज्ञान–रत्नों का। ये ज्ञान–रत्नों का वर्सा तब तक लिया जा सकता है जब तक शांति का पीरियड चल रहा है, पढ़ाई होती है शांति में और जब विनाश शुरू हो जाएगा, भगदड़ मचेगी, फिर ज्ञान की गहराइयों को नहीं समझ सकेंगे। तो विनाश के पहले बाप से वर्सा ले लो; परंतु कुम्भकर्ण की नींद में सोए पड़े हैं। कौन? भारतवासी। तो बिचारे हाय–2 करके मरेंगे।

विदेशी आत्माएँ पहले आ करके पहचान लेती हैं, जान लेती हैं और जो भारत के हैं वो सोए पड़े रहते हैं। इसलिए बताया कि ''विदेशी बाप को प्रत्यक्ष करेंगे।'' फिर ये भी बोला है कि ''बड़े–2 साधु, संत, महात्माओं के निकलने पर और जो बड़े–2 राजाएँ बनने वाली आत्माएँ, मनुष्य–आत्माएँ हैं, उनके निकलने पर ये भारत जो है, स्वर्ग बन जाएगा।'' तो स्वर्ग रुका किसके आधार पर है? जो अंत तक सोते हैं भारत के कुम्भकर्ण। जब तक वो जगते नहीं हैं तब तक स्वर्ग स्थापन होता भी नहीं है। लेकिन फिर टू लेट हो जाते हैं, जितनी शक्ति प्राप्त करनी चाहिए उतनी शक्ति प्राप्त नहीं कर पाते। भारत के कुम्भकर्ण कौन हैं? मुख्य–2 कुम्भकर्ण कौन–से हैं? जो भारत के धर्म हैं, उन धर्मों के मुखिया ही भारत के कुम्भकर्ण हैं– बौद्धी, संन्यासी, सिक्ख, आर्यसमाजी और जो विदेशी धर्म हैं– इस्लाम, मुस्लिम धर्म, क्रिश्चियन धर्म– ये बहुत पावरफुल हैं। तो ये इतनी पावर कैसे ग्रहण कर लेते हैं? इनमें इतनी ताकत कैसे आ जाती, जो बौद्धियों को भी अपनी लपेट में ले लेते, प्रभाव में ले लेते हैं? बौद्ध धर्म नेस्तनाबूद हो गया, संन्यासी तो दुनियाँ में हैं ही बहुत थोड़े। संन्यासियों का राज्य चलता भी नहीं और सिक्ख धर्म तो सिर्फ पंजाब में सिमटा पड़ा है। तो विदेशी इतने पावरफुल कैसे बन गए? इसका मूल कारण कहाँ है? संगमयुग में जब परमात्मा बाप प्रत्यक्ष होता है तो ये विदेशी ही उस बाप को पहले पहचानते हैं और उससे अपना वर्सा ज्ञान–रत्नों का लेते हैं। उन ज्ञान–रत्नों के वर्से के आधार पर ही वो ज़्यादा पावरफुल बन जाते हैं। इसलिए शास्त्रों में भी दिखाया है कि देवताओं–असुरों की लड़ाई लगी। उन दोनों पार्टियों में ज़्यादा पावरफुल कौन था? असुर ज़्यादा पावरफुल हुए। तो उन्होंने ये पावर कहाँ से भरी? संगमयुग में ये पावर भरी, जब परमात्मा बाप इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष होता है तो वो विदेशी पहले पहचान लेते हैं और उस बाप से ज्ञान–रत्नों का वर्सा ले लेते हैं। भारत में भी दक्षिण भारत को भारत का जैसे विदेश कहा है और उत्तर भारत को स्वदेश कहा है। क्योंकि जब विनाश होगा, समुद्र उफान मारेगा, तो समुद्र के किनारे के जितने भी इलाके हैं– मद्रास, बम्बई, कलकत्ता वगैरह, ये सब डूब जाएँगे। तो कौन–सा भारत रह जाएगा? उत्तर भारत रह जाएगा। वो ही भारत का असली हिस्सा है। इसीलिए बताया, कोई–2 प्रश्न करते हैं इस बात में, क्या? कि ये दक्षिण भारत से इतने लोग क्यों आते हैं? पहले उत्तर भारत के लोग क्यों नहीं जगते हैं? वो तो हिंदी भी जानने वाले हैं। परमात्मा बाप आते हैं, हिंदी में बोलते हैं, तो हिंदी जानने वालों को तो पहले समझना चाहिए। लेकिन नहीं, बुद्धि तीखी किसकी होती है? विदेशियों की बुद्धि तीखी होती है। उस तीक्ष्ण बुद्धि के आधार पर वो परमात्मा बाप को पहले पहचान लेते हैं और जब पहले पहचान लेते हैं तो ज्ञान–रत्नों का वर्सा भी वो

सबसे पहले लेते हैं और लम्बे समय तक लेते रहते हैं और भारत के कुम्भकर्ण लास्ट में जागते हैं। तो उनमें कमज़ोरी रह जाती है। जो भारत के धर्म हैं– बौद्धी.....।

तुम्हारी तो जय–जयकार हो जाएगी। विनाश में होता ही है हाहाकार और दूसरी तरफ जय–जयकार। विपरीत बुद्धि हाय–हाय ही करेंगे। क्या कहा? राम–रावण का जो युद्ध दिखाया है उसमें कुम्भकर्ण को विपरीत बुद्धि दिखाया है या प्रीत बुद्धि दिखाया है? (किसी ने कुछ कहा–...) कुम्भकर्ण को! विपरीत बुद्धि दिखाया है? कैसे? उसने तो रावण को साफ कहा था – तुम(ने) बहुत गलती की, मेरे को पहले नहीं जगाया, बहुत गलती हो गई; लेकिन मैं अपने कुल का नाम बदनाम नहीं करूँगा। मेरी बुद्धि उसी तरफ लगी रहेगी, वास्तव में वो भगवान है; लेकिन मैं साथ तेरा दूँगा। तो कुम्भकर्ण ने परमात्मा बाप को पहचान लिया था। दिल से किसकी तरफ था? राम बाप की तरफ। इसलिए कोई उसने अस्त्र–शस्त्र नहीं उठाया। उसने देह–अभिमान का कोई भी अस्त्र–शस्त्र नहीं उठाया। बस, बिना अस्त्र–शस्त्र के लड़ाई लड़ी। तो ये सारी बातें यहाँ की हैं।

संगमयुग में जब ये संन्यासी जागेंगे, ब्राह्मणों के संगमयुगी दुनियाँ के बड़े–2 संन्यासी, मठाधीश–पिठाधीश, तो भारत की विजय हो जावेगी, स्वर्गीय संगठन तैयार हो जाएगा। इसलिए मुरली में बोला– ''बड़े–2 राजाओं और संन्यासियों के जागने पर तुम बच्चों की विजय हो जावेगी।'' अभी तुम बच्चे हो सज्जे की औलाद सज्जे। नर्क का विनाश होने बिगर स्वर्ग कैसे बनेगा? तुम कहेंगे यह तो महाभारी–महाभारत लड़ाई है। तुम कहेंगे। कब कहेंगे? भविष्य की तरफ इशारा किया कि भविष्य में ऐसा टाइम आएगा जो तुम्हारी बुद्धि में बैठेगा कि वास्तव में महाभारी–महाभारत लड़ाई कहाँ है। बाहर की दुनियाँ की बात है या हम बच्चों के ब्राह्मणों की दुनियाँ की अंदर की बात है? तो तुम बच्चे कहेंगे– ये तो महाभारी–महाभारत लड़ाई हमारा युद्ध है। उनसे ही भारत में स्वर्ग के गेट खुलते हैं। किनसे? महाभारी महाभारत गृहयुद्ध से स्वर्ग के गेट खुलते हैं। अगर ये युद्ध नहीं होगा तो स्वर्ग के गेट नहीं खुलेंगे। जो इस युद्ध में शरीक नहीं होगा वो स्वर्ग के गेट में भी घुस नहीं सकेगा। ये युद्ध तो ज़रूर करना पड़े। ये है धर्म और अधर्म का युद्ध।

तुम्हारी बुद्धि में है– हमको अभी दैवी स्वराज्य का मार्क्स मिलता है। वो आपस में लड़ते रहेंगे। कौन लड़ते हैं? आपस में लड़ते हैं कौरव और यवन; कौरव और यादव; लेकिन जो सच्चे पांडव होंगे उनकी कोई से किसी प्रकार की लड़ाई नहीं है। वो लड़ाई लड़ेंगे अपने अंदर के दुर्गुणों से। दूसरों से उनकी कोई लड़ाई नहीं होनी चाहिए। तो वे भी मनुष्य हैं, हम भी मनुष्य हैं। कौन? कौरव और यादव भी मनुष्य हैं और तुम भी मनुष्य हो; परंतु वो हैं आसुरी सम्प्रदाय और तुम हो दैवी सम्प्रदाय। वो आसुरी सम्प्रदाय क्यों? क्योंकि वो असुरों की मत पर चलते हैं। और तुम? तुम ईश्वर की मत पर चलते हो। कौरव, पांडव और यादवों में विशेष फर्क किस बात का रहा? पांडव किसे कहा जाता है? पांडव उनको कहा जाता है जो परमात्मा को जानते भी

हैं, मानते भी हैं और उसके बताए हुए उसूलों पर चलते भी हैं। कौरव उनको कहा जाता है जो परमात्मा को जानते तो हैं, ऐसे नहीं कि वो नहीं जानते हैं; लेकिन मानते नहीं और उसके बताए हुए रास्ते पर चलने का सवाल ही नहीं। और यादव उनको कहा जाता है, न वो अपने अहंकार में आ करके परमात्मा को जानने की इच्छा करते हैं यानी जानते भी नहीं। फिर मानने का सवाल ही पैदा नहीं होता और फिर उसके रास्ते पर चलने का सवाल तो बिल्कुल ही नहीं होता।

तो तुम हो दैवी सम्प्रदाय, ईश्वरीय सम्प्रदाय। तुम बच्चों को अंदर में खुशी रहती है। अनेक बार तुमने ऐसे राजधानी ली है जैसे अभी तुम ले रहे हो। वो आपस में दो बिल्ले बहुत लड़ते हैं और तुमको मक्खन बीच में मिल जाता है। वो लड़ेंगे और तुमको राजाई मिलेगी। सारे विश्व की बादशाही का मक्खन तुमको मिलता है। माना? उनकी लड़ाई के बीच में तुम्हारा काम बन जाता है। उनके अंदर फ्रिक्शन पड़ता है और तुमको अच्छे–2 स्वर्ग के वारिसदार रूपी मक्खन के गोले, वो तुम्हारे हाथ में लग जाते हैं। तो अभी ये मक्खन के गोले चुराने का टाइम चल रहा है। वो यादव सम्प्रदाय की जो कन्याएँ–माताएँ हैं, उन्होंने बहुत मेहनत की है वो मक्खन निकालने के लिए हाथों से, बुद्धि रूपी हाथों की बहुत वर्ज़िश की है, अच्छे–2 गोले निकाल करके रखे हुए हैं, जो स्वर्ग में जा करके वारिसदार बनेंगे, आने वाली नई दुनियाँ में, संगमयुगी स्वर्ग में। अभी टाइम है कि उन मक्खन के गोलों को चुरा लिया जाए। तो वो आपस में लड़ते हैं, काम तुम्हारा बन जाता है। क्या होता है? वो उन श्रेष्ठ रत्नों की तरफ ध्यान नहीं देते, जो ज्ञानी तू आत्माएँ हैं, योगी तू आत्माएँ हैं। वो अपनी लड़ाई के बीच में, देह–अभिमान के बीच में उनको भूल जाते हैं और तुम उन मक्खन के गोलों को उठाय लेते हो। तो सारी विश्व की बादशाही का मक्खन तुमको मिलता है यानी माला के जो भी मणके हैं, श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, वो तुम्हारे हाथ लगते हैं। तुम यहाँ आते ही हो विश्व का मालिक बनने के लिए। यहाँ तुम क्या करने के लिए आते हो? क्या सीखने के लिए आते हो? राजयोग। राजयोग माना? राजाओं का योग। राजाओं का संगठन बनाने के लिए ही बाप के पास आते हो। दुनियाँ में क्या हुआ द्वापर–कलियुग में? रावण–राज्य में राजाएँ सब संगठित हुए या विघटित हो गए? विघटित हुए। तो रावण–राज्य में सब भारत के राजाएँ विघटित हो जाते हैं, माला टूट जाती है, संगठन टूट जाता है, भारत बिखर जाता है और जब बाप आते हैं तो राजयोग के द्वारा राजाओं को इकट्ठा कर देते हैं, संगठित कर देते हैं, तो माला तैयार हो जाती है। तो सारी विश्व की बादशाही का तुमको मक्खन मिलता है।

तुम जानते हो हम बाबा से योग लगा करके कर्मातीत अवस्था को पाएँगे। और कोई उपाय नहीं है। कर्म से अतीत अवस्था को पाना है, तो कैसे का संग करना है? ऐसे का संग करना है जिस पर कर्मों का लेप–छेप न लगता हो। वो कह देते हैं– आत्मा सो परमात्मा, आत्मा निर्लेप है। तुम समझते हो कि मनुष्य–आत्मा कभी निर्लेप हो नहीं सकती। निर्लेप कौन है? एक

परमात्मा ही है जिस पर कर्मों का लेप–छेप नहीं लगता। अगर उस परमात्मा को पहचान लिया और उससे संग का रंग लिया तो निश्चित रूप से हम भी कर्मातीत स्टेज को प्राप्त कर जाएँगे। जैसा संग करेंगे वैसा हमको रंग लगेगा। वो आपस में लड़ेंगे। बजाय कर्मातीत स्टेज को पाने के, बजाय परमात्मा का संग करने के वो किसका संग करेंगे? जिससे लड़ाई लड़ी जाती है तो दुश्मन याद आता है। तो वो आपस में लड़ेंगे तो बुद्धि में कौन रहेगा? एक/दूसरे की दुश्मनी ही याद रहेगी, दुश्मन ही याद रहेंगे और यहाँ आया हुआ है परममित्र। जिससे बड़ा दोस्त, खुदा दोस्त से बड़ा दोस्त कोई दुनियाँ में (होता नहीं)।

हम विश्व की बादशाही पा लेंगे और वो गँवाय (देंगे)– यह तो कॉमन बात है। तो बाहुबल वाले विश्व की बादशाही ले नहीं सकें। वो बात–2 पर अभी धौंस देते हैं– हम पुलिस को बुलाय देंगे, हम कोर्ट में तुमको उठाके रखेंगे, हम ये कर देंगे, हम वो कर देंगे, हमारे पास गुण्डे भी हैं। इस तरह की जो बाहुबल की धमकियाँ हैं, वो देने वाले तो कौरव ही हैं, यादव ही हैं। पांडवों के पास तो ये बल होता ही नहीं। तो वो बाहुबल वाले विश्व की बादशाही गवाएँगे। वो ले नहीं सकते। दुनियाँ में हिटलर, नेपोलियन कितने भी बड़े–से–बड़े सम्राट क्यों न हुए, बाहुबल के आधार पर, दुनियावी बल के आधार पर कोई विश्व के ऊपर राजाई नहीं कर सका। ये तो एक परमात्मा ही है, जो योगबल से विश्व की बादशाही देता है। गायन भी है विश्वनाथ का– हर–2 महादेव शम्भु काशी विश्वनाथ गंगे। विश्व का नाथ कौन बना? जो योगी योगियों का ईश्वर कहा जाता है, वो ही विश्व का मालिक बनता है। योगी के सिवाय और कोई विश्व का मालिक बन नहीं सकता। तो तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। तुम्हारा है ही अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म। दोनों हिंसाएँ वहाँ नहीं होती हैं। कौन–सी दो हिंसाएँ? न वहाँ काम–कटारी की हिंसा होगी और न स्थूल हिंसा। शरीर को जख्मी कर देते हैं, वो तो हुई स्थूल हिंसा। मार–पीट कर देना, वो है स्थूल हिंसा। तो तुम ब्राह्मण बच्चे ये दोनों प्रकार की हिंसा को त्याग करने वाले हो। काम–कटारी की हिंसा सबसे खराब है। जो तुमको आदि–मध्य–अंत दुःख देती है।

यह किसको पता नहीं है कि रावण–राज्य कब होता है, कंसी–जरासिंधियों का राज्य कब होता है। कब होता है? सतयुग–त्रेता में तो सवाल ही नहीं। द्वापर–कलियुग में भी रावण–राज्य का और राम–राज्य का पता नहीं चलता। ये संगमयुग ही है जिसमें रावण भी प्रत्यक्ष होता है और राम भी प्रत्यक्ष होता है। रावण को अनेक सिर दिखाए जाते हैं, जो अनेक मत देने वालों की सूचक हैं। अनेक मत देने वालों का जो संगठन है, वो ही रावण–राज्य है। तो रावण–राज्य अभी है। अभी राम–राज्य नहीं है। राम–राज्य आने वाला है। देवताएँ पतित होना कब शुरू होते हैं? द्वापुर से। जब दो पुर हो जाते हैं, दो–2 मतें हो जाती हैं तो रावण–राज्य होता है और एक मत होती है तो राम–राज्य होता है। यहीं तुम ब्राह्मणों की दुनियाँ के बीच ये बात है। चाहे वो बीजरूप आत्माओं का संगठन हो और चाहे आधारमूर्त/जड़मूर्त आत्माओं का

संगठन हो। अगर उसमें द्वैतवाद शुरू हो जाता है, दो बातें शुरू हो जाती हैं, दो मतें शुरू हो जाती हैं, तो निश्चित रूप से पतन होगा। अगर एक मत चलती है तो उत्थान–ही–उत्थान है। यूनिटी कब बनती है? एक मत से, प्योरिटी से यूनिटी बनती है।

तो पुकारते हैं– आ करके हमको पावन बनाओ, तो ज़रूर कब पावन थे ना! भारतवासी बच्चे पुकारते हैं। कहते हैं दुःख से लिब्रेट करके शांतिधाम में ले जाओ। दुःख हर करके हमको सुख दो। कृष्ण को हरि कहते हैं। क्या हरते हैं? दुःख हरते हैं। बाबा हमको हरि के द्वार में ले चलो। हरि का द्वार है कृष्णपुरी और यह तो है कंसपुरी। कंस क्या करता है? कंस कन्याओं को कोसता है और जो कृष्ण जैसे सात बच्चे पैदा हुए थे, उन बच्चों को भी क्या करता है? कोस देता है। कोस देने का मतलब क्या हुआ? जो उनका स्वाभिमान है वो स्वाभिमान नष्ट करके उनको अपने आधीन बनाय लेता है। कोसने का मतलब है वो आत्माओं के अंदर से प्योरिटी क्या चीज़ होती है इसका फाउण्डेशन ही खत्म कर देता है अर्थात् इम्प्योरिटी में उनको फँसाय देता है, देहधारियों के चंगुल में उनको फँसाय देता है। कंस का काम ये है। और कृष्ण ऐसे चंगुल में फँसता नहीं है। कंस की जो विकारों की जेल है, उस विकारों की जेल से कृष्ण मुक्त हो जाता है। ये 8 नारायणों की ही बात है। 8 नारायण हैं, उनमें जो कृष्ण का पार्ट बजाने वाली आत्मा है, वो कंस के चंगुल से मुक्त हो जाती है और बाकी 7 नारायण कंस के चंगुल में फँस जाते हैं, अच्छी तरह अपने को फँसाय देते हैं, निकल नहीं सकते। तो बाप लिब्रेट करने आते हैं दुःख से; क्योंकि ये कंसपुरी है और हमको कंसपुरी पसंद ही नहीं। विकारों के कोस घर में फँसाने वाली यह कंसपुरी हमको पसंद नहीं है। माया मच्छंदर का खेल भी दिखाते हैं ना!

यह तो तुम जानते हो रावण–राज्य द्वापर से शुरू होता है। जब दो खेमे हो जाते हैं, दो मतें हो जाती हैं, तो रावण–राज्य (होता है)। देवताएँ जो पावन थे, वो पतित होना शुरू हो जाते हैं। इसकी भी निशानियाँ जगन्नाथपुरी में हैं। क्या निशानियाँ दिखाई गई हैं? देवताओं के पतित होने की निशानियाँ दिखाई गई हैं। क्या? मंदिर के बाहर देवताओं के गंदे चित्र दिखाए गए हैं, विकार में जाने वाले।

दुनियाँ में बड़ा गंद लगा हुआ है। अब अपन तो इन बातों से निकल करके परिस्तान में जाते हैं। इसमें बड़ी हिम्मत और महावीरपना चाहिए। किसमें? कि घर–गृहस्थ के कीचड़ में भी रहो, दूर न भागो और साथ–2 बुद्धि से उपराम भी रहो। बड़ी हिम्मत, महावीरपना चाहिए। बाप का बन करके पतित थोड़े ही बनना है। वो समझते हैं स्त्री–पुरुष अगर इकट्ठे रहें तो आग ज़रूर लगेगी। आग न लगे यह हो नहीं सकता। क्या कहा? कौन समझते हैं? संन्यासी लोग ये समझते हैं– अगर स्त्री–पुरुष एक साथ रहेंगे, एक साथ सोएँगे तो आग ज़रूर लगेगी। कौन समझते? संन्यासी। कौन–सी दुनियाँ के संन्यासी? (किसी ने कहा– संगमयुगी समझते हैं) हाँ, संगमयुगी दुनिया में कहाँ कहते हैं ऐसे! ब्राह्मण कहाँ कहते हैं ऐसे? ब्राह्मण तो कहते हैं घर–गृहस्थ में रहते पवित्र रहना है। (किसी ने कुछ कहा–...) बाहर के संन्यासी कहते हैं? (किसी

ने कुछ कहा–...) अंदर के संन्यासी भी हैं जो अलग रहते हैं। उनकी बुद्धि में ये बैठ नहीं सकता कि एक साथ रह करके पवित्रता पालन की जा सकती है। आश्रमों के वातावरण में क्या गृहस्थी नहीं रहते! जैसे घर–परिवार में भाई–बहन इकट्ठे रहते हैं, स्त्री–पुरुष इकट्ठे रहते हैं, एक ही कमरे में सोते हैं, खाते हैं, पीते हैं, बैठते हैं। क्या ऐसे रहते हैं? अगर नहीं रहते हैं तो इकट्ठे कहाँ हुए? तो अलग–2 हुए ना! तो गृहस्थियों को नीची दृष्टि से देखते हैं संन्यासी। किसलिए? क्योंकि वो इकट्ठे रहते हैं और इकट्ठे रह करके पुरुषार्थ करते हैं पवित्र रहने का। तो ज़्यादा पावरफुल पुरुषार्थी कौन हुए? जो घर–गृहस्थ में रह करके पवित्र रहने का पुरुषार्थ करते हैं वो ज़्यादा पावरफुल हुए। ये तो एक प्रकार की जेल हो गई। जैसे कोई कैदी 10 साल जेल में रहे और फिर बाहर निकले तो डींग मारने लगे कि मैंने 10 साल ब्रह्मचर्य का पालन किया। तो मजबूरी हुई या ब्रह्मचर्य का पालन किया? ये तो मजबूरी हो गई। तो वो तो समझते हैं कि इकट्ठे रहने पर आग न लगे ये हो नहीं सकता। इसलिए हंगामा करते हैं। क्या कहा? इतना हंगामा क्यों करते हैं? एडवांस पार्टी के लिए। क्योंकि एडवांस पार्टी में आने वाली जो भी आत्माएँ हैं, वो सब गृहस्थी आत्माएँ हैं। घर–गृहस्थ की कीचड़ में रहने वाली आत्माएँ उस एडवांस ज्ञान को लेती हैं और ये एडवांस ज्ञान जब निकलता है तो उनकी आँख खुलती है– ये क्या हो रहा है! ऐसे भी हो सकता है क्या? हंगामा करते हैं। यहाँ स्त्री–पुरुष को भाई–बहन बनाया जाता है। ऐसा तो कहाँ भी नहीं लिखा हुआ। पता नहीं कौन–सा जादू कर दिया। आदि में जो हुआ वो सब अंत में भी होता है। आदि में भी जादू का खेल हुआ और अंत में भी क्या कहते हैं! जादू कर दिया। अरे, तुम ब्रह्माकुमारियों के पास आएँगे तो तुमको वहाँ बाँध करके रखेंगी– ऐसे–2 कह देते हैं। क्या कहा? तुम अगर उन ब्रह्माकुमार–कुमारियों के पास पहुँचेंगे तो वो तुमको बाँध लेंगे। कहते हैं तांत्रिक विद्या जानते हैं। इसलिए उनके पास नहीं जाना, दृष्टि भी नहीं मिलाना, बात ही नहीं करना। तो ऐसे–2 कहते हैं। ऐसे–2 बहकाते रहते हैं ...। यह भी ड्रामा में नूँध है। उनका बहकाना भी ड्रामा में नूँध है। जिनका पार्ट होगा वह तो कैसे भी करके आ जावेंगे। कोई कितना भी बहकावे, वो उनके बहकावे में आने वाले नहीं हैं। इसमें डरने की कोई बात नहीं है।

शिवबाबा तो ज्ञान का सागर है, पतित–पावन है, सर्व का सद्गति दाता है। ब्रह्मा द्वारा पतित से पावन बनाते हैं। किसके द्वारा? ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा कहाँ है? जब द्वारा है, मीडिया है तो साकार में होना चाहिए ना! तब तो पतित से पावन बनेंगे। तो कहाँ है? (किसी ने कुछ कहा–...) सूक्ष्मवतन? सूक्ष्मवतन में जाकर पतित से पावन बनेंगे? सूक्ष्मवतन में सब पावन ही होते हैं, वहाँ तो पतित की बात ही नहीं और वहाँ तो सम्बंध ही नहीं होते। वो तो है ही फरिश्तों की दुनियाँ, रिश्तों को दुनियाँ ही नहीं है। तो ज़रूर जिस ब्रह्मा ने शरीर छोड़ दिया है वो ब्रह्मा कोई ब्राह्मण बच्चे में प्रवेश करके पार्ट बजाता है। ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है। जब तक नई सृष्टि स्थापन नहीं हुई है, ब्रह्मा का पार्ट समाप्त नहीं हो सकता। तो ब्रह्मा द्वारा ही पतित से पावन बनाते हैं। यह अक्षर ऐसे बड़े–2 लिखे हों– जो कोई भी आ

करके पढ़ें। क्या? कि यहाँ ब्रह्मा द्वारा पतितों को पावन बनाया जाता है। कहते हैं– ये कौन–सा ब्रह्मा नया निकल पड़ा!

पवित्रता पर ही असुर लोग कितने विघ्न डालते हैं। किसी भी देहधारी में मोह की रग नहीं होनी चाहिए। मोह की रग होगी तो फँस पड़ेंगे। यहाँ तो अम्मा मरे, बीबी मरे तो भी हलवा खाना है। क्या बात है? ये क्यों नहीं कहा– बप्पा मरे तो भी हलवा खाना है? बप्पा मरता ही नहीं है। बप्पा तो साथ ले करके जाएगा। मरने की बात किसकी है? ब्रह्मा मरे। ब्रह्मा शरीर छोड़ सकता है। इसलिए मुरली में बोला हुआ है– ''अगर ये ब्रह्मा चला जावे तो जिस तन में भी प्रवेश करेंगे उसका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।'' (मु.ता.17.3.73 पृ.2 अन्त) तो अम्मा मरे तो भी हलवा खाना है और बीबी मरे तो भी हलवा खाना है। बाबा सामने बिठा करके पूछता है– कल तुम्हारा कोई मर जाए तो रोएँगे या नहीं रोएँगे? पूछते हैं। अगर आँसू आया तो फेल हो गए। (किसी ने कुछ कहा–...) बीबी मरे तो! (किसी ने कुछ कहा–...) नहीं, भारत में तो परम्परा है, बाबा ने मुरली में बोला है– ''ये ब्रह्मा मेरा लांगबूट है। जूती है, बड़ी जूती है। भारत में पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो कहते हैं कि एक जूती गई अब दूसरी लेते हैं।'' (मु०21.6.74 पृ०3 मध्य) हाँ, (किसी ने कुछ कहा–...)...तो फट से जूती ले लो, शिवबाबा जूती बन गया ना! बाबा तो सजनी बनने के लिए तैयार है। समझो शिवबाबा हमारी सजनी है, साथीदार है। आँसू आया तो फेल हो जाएँगे। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया, उसमें रोने की बात क्या है। दूसरा कोई सुने तो कहे कि मुख से अच्छा तो बोलो। अरे! हम तो अच्छा ही बोलते हैं। सतयुग में रोना होता नहीं। यह जीवन तुम्हारा सबसे अमूल्य है। तुम ही सबको रोने से बचाने वाले हो। फिर अब तुम कैसे रोएँगे? हमको पतियों का पति मिल गया जो हमको स्वर्ग में ले जाता है, फिर हम नर्क में गिरने वाले के लिए रोएँगे क्यों? तो बाप कितनी मीठी–2 बातें सुनाते हैं वर्सा लेने लिए।

इस समय भारत का कितना अकल्याण हुआ पड़ा है। बाप आ करके कल्याण करते हैं। भारत को मगध देश कहते हैं। सिंध जैसे फैशनेबुल कोई होते नहीं हैं। विलायत से फैशन सीख करके आते हैं। बाल बनाने पर आजकल लड़कियाँ कितना खर्चा करती हैं। उनको कहा जाता है– नर्क की परियाँ। क्या कहा? (किसी ने कुछ कहा–...) हाँ, नर्क की भी परियाँ होती हैं। वो भी ज्ञान–योग के पंखों से उड़ती हैं; लेकिन साज–सामान ऐसे ही इकट्ठे करती हैं। बाप तुमको स्वर्ग की परियाँ बनाते हैं। इसमें कौड़ी पाई का भी खर्चा नहीं। कहते हैं हमारे लिए तो यहाँ ही स्वर्ग है। इस दुनियाँ का हम यह सुख तो ले लेवें, कल क्या होगा, हम क्या जानें! पति परमेश्वर है, ऐसे कहते हैं। अब बताओ, परमेश्वर विख माँगेगा क्या? अच्छा– मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। ओम् शांति।